International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

बरेली जनपद के ग्रामीण क्षेत्र ''चनेटी'' की : बालिकाओं की साक्षरता का स्तर

डॉ0 अनुराधा गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर, बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तर प्रदेश।
रुचि रानी
शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा वर्तमान समय में बालिकाओं के लिए अत्यधिक आवश्यक है। प्रत्येक बालिका अपने व्यक्तित्व का विकास तभी कर सकती है, जब उसे बचपन से ही शिक्षा ग्रहण करने की सभी सुविधा प्राप्त हो तथा उनके लिए शिक्षा ग्रहण करने के लिए अलग से अच्छे स्कूल कॉलेज खोलें जायें। शिक्षा ही बालिकाओं के भविष्य को उजागर करती हैं।

लेकिन जब यही शिक्षा बालिकाओं को समाज में ठीक प्रकार से नहीं दी जाती या फिर उन्हें अच्छे स्कूल, कॉलेज पढ़ने के लिये नहीं मिल पाते, जिससे समाज में अनेक बालिकायें कम शिक्षित तथा अशिक्षित रह जाती हैं तथा किसी कारणवश शिक्षा ग्रहण करने से विमुख रह जाती हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास उस प्रकार से नहीं हो पाता जितना अच्छे ढंग से वह करना चाहतीं हैं।

शिक्षा और समाज में गहरा सम्बन्ध है शिक्षा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलती रहती है और इस संस्कृति की निरन्तरता बनी रहती है और दूसरी ओर पारिस्थितिक परिवर्तन में उसे अनुकूलन का साधन बनने की प्रेरणा देता है। आज की भारतीय शिक्षा प्रणाली एक साथ कई विपरीत और विरोधी समस्याओं से ग्रस्त है। विरोधी लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रयत्नों में वह स्वयं लक्ष्यहीन बन गई है। शिक्षा में आये वर्तमान संकट की जड़े समकालीन संस्कृति के संकट में निहित है।

आज की शिक्षा प्रणाली के प्रति व्यग्रता और मोहभंग के प्रमुख कारण हैं शिक्षा का जीवन की आवश्यकताओं के साथ कोई सहज सम्बन्ध नही रह गया है यदि शिक्षा को सामाजिक दृष्टि से संगत और सार्थक बनाना है तो उसे अनेक समुदायों से जुड़ना होगा और ऐसी न्यायपूर्ण संतुलित शिक्षा विश्व व्यवस्था के निर्माण के प्रश्न पर भी विचार करना होगा। जिससे मानवता अपनी इच्छा के अनुरुप एक वैकल्पिक भविष्य का निर्माण कर सके।

प्रस्तुत अध्ययन बालिकाओं के साक्षरता के स्तर जो कि समाजशस्त्रीय अध्ययन है कि उनकी शिक्षा से सम्बन्धित समस्यायें क्या हैं और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है, इसी विषय को विश्लेषण द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया हैं, साथ ही साथ शोधार्थिनी ने उत्तरदाताओं की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति को भी जानने का प्रयास किया है, क्योंकि परिवार और समाज दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और परिवार और समाज दोनों ही बालिकाओं के व्यक्तित्व को निखारने में सहायक होते हैं, क्योंकि ज्ञान की किसी भी शाखा का उस समय तक कोई महत्व नहीं है जब तक उसका प्रयोग मानव जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाने में नहीं किया जा सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि समस्याओं की जड़ों तक जाकर अध्ययन किया जायें।

आशा यही है कि अध्ययन प्रविधियों तथा पद्धतियों के अन्तर्गत निमित्त किया गया है जो कि बरेली जनपद के ग्राम चनेटी की **''बालिकाओं की साक्षरता का स्तर''** को प्रगट करने में सफल होगा।

आज के औद्योगिक युग में परिवर्तन की तीव्र प्रक्रिया ने सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को परिभाषित किया है। अधिकारों के क्षेत्र में वृद्धि हुई है, बालिकायें शिक्षा के प्रति जागरूक हो रही है। इस प्रकार शिक्षा प्रणाली के स्वरुप में भी परिवर्तन आया है। बालिकाओं के अधिकारों एवं शिक्षा के प्रति जागरुक होने से भी समाज की परम्परागत शिक्षा में परिवर्तन उत्पन्न होने लगा है।

यह सर्वविदित है कि बालिकाओं के उत्तम चरित्र के निर्माण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, परन्तु वर्तमान स्थिति में अभी भी यह देखने को मिलता है कि कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकायें पूर्ण शिक्षा ग्रहण करने से विमुख हैं। बालिकाओं की शिक्षा के प्रति इच्छा रखने के बावजूद भी शिक्षा की व्यवस्था ठीक न होने के कारण बालिकायें शिक्षा के सुख से वंचित रह जाती हैं। और उन्हें अच्छी शिक्षा नहीं मिल पाती जो उन्हें मिलना चाहियें।

प्रत्येक गाँव में बालिकाओं की शिक्षा की ठीक व्यवस्था नहीं है तो, बालिकायें अपने भविष्य को उज्जवल बनाने में सफल नहीं हो पाती हैं। शहरों में बालिकाओं की उचित व्यवस्था होने के कारण आज बालिकायें हर क्षेत्र में लड़को से आगे निकल रही हैं। लेकिन अभी कुछ गाँवों में लड़कियाँ, लड़को से पीछे हैं। अतः गाँव की प्रत्येक बालिका को उचित शिक्षा मिलनी चाहियें क्योंकि बालिकायें ही आगे चलकर किसी की पत्नी, सास आदि बनती हैं और

एक सफल ग्रहिणीं डाक्टर, इजींनियर, टीचर आदि बनती हैं और समाज के निर्माण एवं विकास में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करती हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. बालिकाओं की साक्षरता के स्तर को ज्ञात करना हैं।
2. बालिकाओं की शिक्षा के प्रति रुचि को ज्ञात करना है।
3. बालिकाओं का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोंण एवं उनके व्यक्तिगत जीवन को ज्ञात करना है।
4. बालिकाओं के पारिवारिक जीवन एवं व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोंण की स्थिति का अध्ययन करना है।
5. बालिकाओं की सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थिति में होने वाले परिवर्तनों एवं मनोरंजन के साधनों का अध्ययन करना है। एवं उनके विचारों का मूल्यांकन करना है।

शोध प्रारुप :– अध्ययन की सफलता के लिये, क्षेत्र के निर्धारण के बिना शोध करना असंभव है। अतः क्षेत्र का निर्धारण आवश्यक हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत बरेली जनपद के चनेटी ग्रामीण क्षेत्र की

''बालिकाओं की साक्षरता का स्तर'' जो कि समाज शास्त्रीय अध्ययन के द्वारा ज्ञात किया जायेगा। चूंकि बरेली जनपद के चनेटी ग्रामीण क्षेत्र की संख्या अधिक होने पर समय और साधन को ध्यान में रखते हुयें शोधार्थनी ने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु 55 बालिकाओं का चयन किया है ताकि वैज्ञानिक निष्कर्ष निकाला जा सके।

उत्तरदाताओं की शिक्षा का स्तर :– व्यक्तित्व के विकास में सांस्कृतिक तत्व शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है शिक्षा जन्म से मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है। इस शिक्षा के द्वारा ही बालिकाओं का जीवन विकसित होता है।

वर्तमान युग में शिक्षा का महत्व अत्यधिक बढ़ता जा रहा है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम हैं जो प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य को सहायता प्रदान करती हैं।

एक शिक्षित बालिका अशिक्षित बालिका की अपेक्षा अपने विचारों को अच्छी तरह स्पष्ट कर सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र में बालिकाओं के शिक्षा के स्तर को सारिणी सं0–1 के द्वारा दर्शाया गया है।

सारिणी सं0–1 शिक्षा का स्तर

क्र.स.	शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओ की संख्या	कुल योग का प्रतिशत
1	अशिक्षित	10	10
2	प्राइमरी	11	11
3	जूनियर	9	9
4	माध्यमिक	10	10
5	इण्टरमीडिएट	15	15
	योग	55	55

उर्पयुक्त सारिणी का विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ है कि हमारे 10 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित हैं तथा प्राइमरी करने वाले का 11 प्रतिशत तथा जूनियर करने वालों का 9 प्रतिशत तथा माध्यमिक करने वालों का 10 प्रतिशत और इण्टरमीडिएट करने वाले उत्तरदाताओं का 15 प्रतिशत हैं।

2. उत्तरदाताओं की शिक्षा के प्रति रुचि :

शिक्षा ही वह कुंजी है जो जीवन के सभी द्वार खोल देती है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी कुछ बालिकायें शिक्षा के प्रति जागरुक हुई हैं। कुछ बालिकायें जो किसी कारणवश शिक्षित नहीं हो पायीं है उनमें से भी कुछ बालिकाओं को अभी भी शिक्षा के प्रति अधिक रुचि है और कुछ बालिकायें ऐसी भी हैं जो शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, लेकिन उनका मन पढ़ाई में नही लगता है। जिसे सारिणीं सं0 –2 के द्वारा दर्शाया गया हैं।

सारिणी सं0–2 उत्तरदाताओं की शिक्षा के प्रति रुचि

क्र.स.	शिक्षा के प्रति रुचि	उत्तरदाताओ की संख्या	कुल योग का प्रतिशत
1	हाँ	45	45
2	नहीं	10	10
	योग	55	55

उपर्युक्त सारिणीं से यह स्पष्ट होता है कि हमारे 45 प्रतिशत उत्तदाताओं की शिक्षा के प्रति रुचि और 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं की शिक्षा के प्रति रुचि नहीं हैं। 45 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी हैं जो शिक्षा प्राप्त नही कर सके लेकिन फिर भी शिक्षा के प्रति उनकी रुचि हैं।

उत्तरदाताओं के परिवार की सामाजिक स्थिति :– मानव समाज का इतिहास, परिवार का इतिहास है क्योंकि मानव जीवन के प्रारम्भ से ही परिवार उसके साथ है और किसी न किसी रुप में सांस्कृतिक विकास के सभी स्तरों पर पाया जाता हैं। इतना ही नहीं 'चार्ल्स कूले' ने परिवार को एक ऐसा प्राथमिक जीवन व आदर्शों का निर्माण होता हैं। इस रुप में परिवार बालिकाओं के समाजीकरण का एक प्रमुख साधन है तथा सामाजिक नियंत्रण के महत्वपूर्ण साधन के रुप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता हैं।

यद्यपि समाज में सभी परिवारों की स्थिति समान नहीं होती है अतः सामाजिक स्थिति के आधार पर कोई भी परिवार अत्यधिक उच्च स्थिति मध्यम तथ निम्न स्थिति वाला होता हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत शोधार्थिनी ने उत्तरदाताओं के परिवार की स्थिति को जानने का प्रयास किया है, जिसे सारिणीं सं0–3 में प्रदर्शित किया गया है।

सारिणीसं0–3 उत्तरदाताओं के परिवार की सामाजिक स्थिति

क्र.स.	स्वरुप	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग का प्रतिशत
1	उच्च	12	12
2	मध्यम	38	38
3	निम्न	5	5
	योग	55	55

उर्पयुक्त सारिणीं से स्पष्ट होता है कि हमारे उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति का एक बड़ा भाग 38 प्रतिशत मध्यम परिवार से है तथा 12 प्रतिशत उच्च परिवार से एवं निम्न परिवारों से 5 प्रतिशत उत्तरदाता हैं।

1. उत्तरदाताओं का पारिवारिक वातावरण :–

प्रत्येक लड़की के व्यक्तित्व का उचित विकास उसके परिवार से ही प्रारम्भ होता हैं। बालिकाओं के व्यक्तित्व का उचित विकास के लिये एक अच्छे वातावरण की आवश्कता होती हैं। यदि परिवार का वातावरण सौहार्दपूर्ण होगा तो न केवल लड़की के व्यक्तित्व का विकास होगा बल्कि समाज में उसके परिवार की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी। सामान्य पारिवारिक वातावरण में भी लड़की अपने व्यक्तित्व का उचित विकास कर लेती हैं परन्तु जब कभी परिवार की स्थिति अशान्तिमय हो जाती है या परिवार के सदस्यों में सहयोग नहीं रह जाता तो परिवार के विद्यटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत उत्तरदाताओं के पारिवारिक वातावरण को जानने का प्रयास किया गया है, जिसे सारिणीं सं0–4 के माध्यम से दर्शाया गया है :–

सारिणीसं0–4 उत्तरदाताओं के परिवार की सामाजिक स्थिति

क्र.स.	स्वरुप	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग का प्रतिशत
1	सौहादपूर्ण	15	15
2	सामान्य	32	32
3	संर्घषपूर्ण	8	8
	योग	55	55

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि हमारे उत्तरदाताओं के परिवार का एक बड़ा भाग 32 प्रतिशत सामान्य वातावरण से सम्बन्धित हैं तथा 15 प्रतिशत सौहार्दपूर्ण वातावरण से तथा 8 प्रतिशत उत्तरदाता संघर्षपूर्ण वातावरण से सम्बन्धित हैं।

उत्तरदाताओं की पारिवारिक शिक्षा :– मानव द्वारा किया आदिकाल से ज्ञान का संचय किया जाता रहा है। प्रत्येक नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी द्वारा कुछ ज्ञान सामाजिक विरासत से प्राप्त करता है। ज्ञान की यह परम्परागत श्रृंखला, ही शिक्षा है जिसके द्वारा मानव ने अपनी मानसिक अध्यात्मिक और सामाजिक प्रगति की है, शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान रुपी प्रकाश को प्राप्त कर अज्ञान रुपी अंधेरी रात्रि के अन्धकार को दूर करना है। शिक्षा के आभाव में ज्ञान और विज्ञान दोनों का आभाव होगा।

शिक्षा एक ऐसी संस्था है जिसका उद्देश्य मानव में मानसिक अध्यात्मिक सामाजिक एवं भौतिक गुणों का विकास करना हैं जिससे कि वह अपने सम्पूर्ण पर्यावरण के साथ सफल अनुकूलन कर सकें।

इसलिये शोधार्थिनी ने उक्त के संर्दभ में उत्तरदाताओं की पारिवारिक शिक्षा को जाने का प्रयास किया है।

1. उत्तदाताओं की पारिवारिक शिक्षा में मात्रा की शिक्षा को ज्ञात करने पर यह पाया गया कि 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं की माता शिक्षित हैं और 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की माँ नही है तथा 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं की माता अशिक्षित हैं।
2. पिता की शिक्षा की स्थिति ज्ञात करने पर यह पाया गया कि 3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पिता अशिक्षित है और 2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पिता जी नहीं हैं एवं 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पिता शिक्षित हैं।
3. भाई की शिक्षा का विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि 5 प्रतिशत उत्तरदताओं के भाई नहीं हैं और 5 प्रतिशत के भाई अशिक्षित हैं तथा 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं के भाई शिक्षित हैं।
4. उत्तरदाताओं की बहिन का शिक्षा का विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं की बहिनें शिक्षित हैं एवं 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की बहिनें अशिक्षित हैं।

उत्तरदाताओं के परिवारों की व्यवसायिक स्थिति :– प्राचीन समय में जहाँ सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण जाति नातेदारी इत्यादि के फलस्वरुप परम्परागत रुप से होता हैं वहीं अब वर्गीय विशेषताएं अर्थात अर्थिक स्थिति, आय और पद परिस्थिति के निर्माण में महत्वपूर्ण मानें जाते हैं ऐसी स्थिति में व्यक्ति उन व्यवसायों को चुनने में अधिक बल देने लगता हैं जो कि अधिक आय दे सकतें हैं चाहें वह व्यवसाय किसी भी तरह का हो।

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानना आवश्यक समझा गया कि उत्तरदाताओं के माता–पिता या अभिभावकों की व्यवसायिक स्थिति कैसी हैं वे किस व्यवसाय में संलग्न है उत्तरदाताओं से प्राप्त उत्तरो को सारिणी सं0–5 में दर्शाया गया है :–

सारिणीसं0–5 उत्तरदाताओं के परिवारों की व्यवसायिक स्थिति

क्र.स.	व्यवसायिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग का प्रतिशत
1	सर्विस	32	32
2	कृषि	10	10
3	व्यापार	3	3
4	अन्य	10	10
	योग	55	55

उर्पयुक्त के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि 10 प्रतिशत उत्तरदताओं के परिवार कृषि से जुड़े हुयें हैं और 3 प्रतिशत उत्तरदाताओं का परिवारों में व्यापार है और 32 प्रतिशत परिवार सर्विस करतें हैं और 10 प्रतिशत परिवार अन्य तरह के व्यवसाय से जुड़े हुयें हैं।

उत्तरदाताओं की शैक्षिक समस्या :– गाँव व नगरों में भी शिक्षा के क्षेत्र में लड़को व लड़कियों के बीच विभेदीकरण बरता जाता है, पुरुष की शिक्षा–दीक्षा को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है उनकी शिक्षा पर गर्व किया जाता है तथा उन्हें शिक्षा ग्रहण कराने हेतु सुविधायें प्रदान की जाती हैं, जबकि यदि कोई लड़की बिना किसी विशेष सुविधा के भी शिक्षा ग्रहण करना चाहें तो उसे प्रताड़ित किया जाता हैं। अधिकांश लोग शिक्षा को चूँकि नौकरी प्राप्त करने का साधन मात्र समझते हैं अतः वह बालिका के शिक्षा प्राप्त करने को सामाजिक दृष्टि से हेय समझने लगते हैं। अधिक शिक्षित होने पर विवाह तथा दहेज सम्बन्धी समस्याऐं उपस्थित होने के भय से भी लोग बालिकाओं की शिक्षा की उपेक्षा करते हैं।

ग्रामीण व निर्धन क्षेत्रों में पर्याप्त आय के आभाव में चूँकि परिवार के सभी सदस्यों को दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आर्थिक क्रियाओं में संलग्न होना पड़ता है। या तो छोटी बालिकाओं को अपने माता–पिता के काम पर जाने के पश्चात् परिवार की देखभाल करती है अथवा आर्थिक क्रियाओं में भागीदार बनकर परिवार का भरण–पोषण करनें में सहायता करती हैं। अतः उनका विद्यालय जाना परिवार के हित में नहीं होता, यही कारण है कि निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था होने पर भी वे साक्षर तक नहीं हो पाती और

यदि शिक्षा की दृष्टि से परिवार में कभी विचार भी किया जाता है तो प्रथम अवसर लड़को को ही दिया जाता हैं और बालिकायें इच्छुक होते भी शिक्षा से वंचित रह जाती है।

अतः लड़कियों में शिक्षा के आभाव में, का तात्पर्य उसमें आत्मनिर्भर तथा आत्मविश्वास की कमीं हैं, जिसके कारण वह अपनी समस्याओं का स्वतः ही समाधान करने में सक्षम नहीं हैं। बालिकाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक हैं।

गाँधी जी ने कहा था कि :–

''एक बालिका की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि लड़को को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता हैं किन्तु एक बालिका की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित होता हैं।''

अतः शोधार्थिनी ने प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की शैक्षिक समस्या को जानने प्रयास किया जिसे सारिणीं संख्या–6 में दर्शाया गया हैं :–

सारिणी सं0–6 उत्तरदाताओं की शैक्षिक समस्या

क्र.स.	शैक्षिक समस्या	उत्तरदाताओं की संख्या	कुल योग का प्रतिशत
1	विद्यालय का आभाव	00	00
2	विद्यालय में उचित	5	5
3	व्यवस्था का न होना	–	–
4	आर्थिक समस्या	33	33
5	रुचि न होना	7	7
6	अन्य	10	10
	योग	55	55

उर्पयुक्त सारिणीं से स्पष्ट है कि किसी भी उत्तरदाताओं को विद्यालय के आभाव की समस्या नहीं हैं। 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं को विद्यालय में उचित व्यवस्था न होने की समस्या नहीं हैं, 33 प्रतिशत उत्तरदाताओं को आर्थिक समस्या हैं और 7 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शिक्षा के प्रति रुचि नहीं हैं। अन्य 10 प्रतिशत उत्तदाताओं को अन्य समस्यायें हैं।

प्रस्तुत अध्ययन बरेली महानगर के ग्रामीण क्षेत्र चनेटी की ''**बालिकाओं की साक्षरता का स्तर**'' से सम्बन्धित कुछ विशेष पहलुओं के, विश्लेषण के उद्देश्यों से प्रस्तुत किया हैं।

आज के ओद्यौगिक युग की तीव्र प्रक्रिया ने हमारे सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को परिवर्तित किया है। परम्परागत शिक्षा प्रणाली के स्थान पर नई आधुनिकतम शिक्षा प्रणाली ने जन्म लिया है। अधिकारों के क्षेत्र में वृद्धि हुई है, बालिकायें शिक्षा एवं अधिकारों के प्रति जागरुक हो रहीं हैं। इस प्रकार शिक्षा प्रणाली के स्वरुप में भी परिवर्तन आया हैं फिर भी क्या करण हैं कि गाँव और नगरों में बालिकरयें उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहीं है ? क्योंकि उनकी शिक्षा प्राइमरी एवं माध्यमिक तक ही हो पाती हैं ?

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि जो इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हैं। यह अध्ययन प्रमुख रुप से दो पहलुओं की व्याख्या से सम्बन्धित हैं।

1. बालिकाओं की विशिष्टताओं यथा उनकी आयु, जाति, शिक्षा का स्तर, शिक्षा के प्रति रुचि एवं उनकी विभिन्न परिस्थितियों की सामाजिक संर्दभ की व्याख्या करता है।
2. बालिकाओं की शिक्षा की समस्या उनके विचार के सम्बन्ध में उनके विभिन्न दृष्टिकोंण का विश्लेषण करना हैं।

अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष :– प्रस्तुत अध्ययन जो कि बरेली महानगर के ग्रामीण क्षेत्र चनेटी की, बालिकाओं की साक्षरता से सम्बन्धित है इससे निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ जो इस प्रकार से हैं :–

बरेली महानगर के ग्रामीण क्षेत्र चनेटी में शिक्षा का काफी अधिक प्रभाव देखने को मिलता हैं, शिक्षा के प्रति इस क्षेत्र की अधिकांश बालिकायें जागरुक हुई हैं। एकांकी परिवार भी अत्यधिक देखने को मिल रहे हैं और वहां के लोगो में जातिवाद के प्रति भी दृष्टिकोंण न के बराबर है।

अतः यह भी ज्ञात हुआ कि बरेली महानगर के ग्रामीण क्षेत्र चनेटी की कुछ बालिकायें शिक्षा की उचित व्यवस्था न होने की वजह से आगे की शिक्षा ग्रहण नहीं की पायीं हैं क्योंकि अभी भी इस क्षेत्र में कुछ परिवार ऐसे हैं जो कि अपनी बालिकाओं को उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिये बाहर नहीं भेजते हैं।

सन्दर्भ

1. घुरिये, जी0 एस0 : जाति वर्ग एवं व्यवसाय, पापुलर प्रकाशन, मुम्बई।
2. डा0 आशु रानी. : महिला विकास कार्यक्रम।
3. दुबे, श्यामाचरण : शिक्षा समाज और भविष्य।
4. अग्रवाल, जी0के0 : सामाजिक अनुसंधान एवं भारतीय विचारक। 5. गीता पुष्प शॉ एवं जॉयस शीला शॉ : प्रसार शिक्षा।
5. बरेली नगर विकास पुस्तिका : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बरेली।